2024 TPJ | VOLUME 2, ISSUE 1
April - June | ISSN – 2584- 0517

भारतीय जीवनदर्शन की सार्वभौमिक समदृष्टि

योगेश पाण्डे
सहायक आचार्य, केन्द्रिय संस्कृत विश्वविद्यालय, वेदव्यास परिसर

Abstract-
वर्तमान काल में समाज के समक्ष अनेक चुनौतियाँ हैं, जिनमें प्रमुखतया भोगवादी दृष्टि, परिवार व्यवस्था में विघटन, समाज एवं राष्ट्र में संगठन का अभाव मनुष्यों में परस्पर समभाव एवं समदृष्टि का अभाव आदि प्रमुख है। इन सभी क्षेत्रों में भारतीय मनीषियों द्वारा प्रदर्शित भारतीय जीवन दर्शन वर्तमान समय वैश्विक दृष्टि से अत्यन्त प्रासङ्गिक एवं अनुकरणीय है। वेदोक्त समदृष्टि, वैविध्य का एकत्व एवं एकत्व की ही अनेकत्व में अभिव्यक्ति, पुरुषार्थचतुष्टय, आश्रमव्यवस्था, प्रकृति से समन्वय, त्यागभाव आदि विषयों में पर भारतीय परम्परा में निरन्तर परिष्कारित दृष्टि से विचार एवं चिन्तन होता रहा है। जो कि वैश्विक समस्याओं के समाधान के परिप्रेक्ष्य में अत्यन्त प्रासङ्गिक है।

Keywords - भारतीय जीवनदर्शन, सार्वभौमिक समदृष्टि, त्यागवाद, भोगवाद

Introduction –

प्रौद्योगिकी के वर्तमान समय में विश्व निरन्तर आगे बढ़ रहा है; तथापि इस मार्ग में अनेक विकट चुनौतियाँ भी जन्म ले रही है। पृथिवी पर पृथिवी के निवासियों में मानव के प्रति ही स्वार्थ प्रवृत्ति के कारण, परस्पर मैत्रीभाव, करणीय कर्तव्यों का अभाव से युद्ध तथा अघोषित युद्ध जैसी समस्याएँ उत्पन्न हो रही हैं। ऐसे परिवेश में वैश्विक परिवेश में भारतीय जीवन दर्शन की सार्वभौमिकता सर्वत्र प्रासङ्गिक है। समस्त अभ्युदयों का प्रयोजक है समाज एवं राष्ट्र में परस्पर संगठन, संवर्द्धन, सद्भाव तथा अपने ही न्यायोचित भाग में एक मात्र संतोष रखना, दूसरों के भोगों को लेने की इच्छा तक भी नही करना इत्यादि। यही मानवता का आदर्श भी है। उपनिषद् कहते हैं –

ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत्।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथाः, मा गृधः कस्य स्विद्धनम्॥
(ईशावास्योपनिषद् १)

त्यागभाव का यह उपदेश आज समस्त राष्ट्रों के लिए अनुकरणीय है। परस्पर मैत्रीभाव से युक्त होकर एक साथ रहने, बोलने, खाने-पीने तथा एक दूसरे की भावनाओं का आदर करने का उपदेश वेद में मिलते हैं। जो समस्त राष्ट्रों, समुदायों एवं मनुष्यों से समदृष्टि एवं समभाव से परस्पर आगे बढ़ने का आह्वाहन करते हैं। वैदिक ऋषि कहते हैं कि –

संगच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।
देवा भागं यथा पूर्वे सञ्जानाना उपासते। (ऋग्वेद 10/19/2)

2024 TPJ | VOLUME 2, ISSUE 1
April - June | ISSN – 2584- 0517

वैदिक ऋषियों की वेदोक्त समदृष्टि केवल उपदेश मात्र नही; अपितु यह उनका अनुभव जन्य साक्षात्कृत् ज्ञान है। जो सभी काल, स्थान, परिस्थिति में अनुकरणीय एवं अकाट्य हैं। भारतीय दृष्टि सदैव विचारधाराओं को पूर्ण तार्किक-चर्चा के लिए स्थान देती है, इसके परिणाम स्वरूप ही अनेक दार्शनिक प्रस्थान जन्म लेते हैं। परम चेतन का जङ एवं चेतन सर्वत्र व्याप्त होना, आध्यात्मिकता के उच्चस्तर पर सभी उपाधियों का निरसन, विरुद्ध धर्माश्रयत्व की प्रबल भावना, वैराग्य का लोकयात्रा अथवा पुरुषार्थ में सहयोगी होना, मानवाधिकारों का पल्लवन आदि भारतीय-धर्मचिन्तन के वे मूलबिन्दु हैं जो बीजरूप में सर्वत्र व्याप्त होते हुए वैश्विक सभी भूमियों में एक समदृष्टि का उन्मेष करते हैं। इसी प्रकार भारतीय जीवनदृष्टि सर्वत्र अभेद दृष्टि पर बल देती है। जिसको भारतीय परम्परा में प्राप्त अनेकों अवधारणाओं को अधोलिखित बिन्दुओं के माध्यम से समझा जा सकता है।

- केवल मनुष्य में चेतना है यह पाश्चात्य अवधारणा है, किन्तु भारतीय दृष्टि में पशु, पक्षी ,वृक्ष नदी, पर्वत आदि सभी को चेतन माना गया है-

समं सर्वेषु भूतेषु तिष्ठन्तं परमेश्वरम्
विनश्यत्स्वविनश्यन्तं यः पश्यति स पश्यति
॥ (भ.गीता13.28)

- भर्तृहरि वैराग्य शतक के अन्तिम श्लोक पृथ्वी को माता, वायु को पिता, तेज को मित्र आदि रूप प्रणाम करते हुए कृतज्ञता व्यक्त करते हैं।

मातर्मेदिनि तात मारुत सखे तेजः सुबन्धो जल
भ्रातर्व्योम निबद्ध एव भवतामन्त्यः प्रणामाञ्जलिः ।
युष्मत्सङ्गवशोपजातसुकृतस्फारस्फुरन्निर्मल-
ज्ञानापास्तसमस्तमोहमहिमा लीये परब्रह्मणि ।।
(१००)

- महाकवि कालिदास अभिज्ञान शाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क में शकुन्तला के पतिगृह गमन पर महर्षि कण्व वृक्ष लता आदि से शकुन्तला को पतिगृह जाने की अनुमति प्रदान करने की प्रार्थना करते हैं –

पातुं न प्रथमं व्यवस्यति जलं युष्मास्वपीतेषु या नादत्ते
प्रियमण्डनापि भवतां स्नेहेन या पल्लवम् ।
आद्ये वः कुसुमप्रसूति समये यस्या भवत्युत्सवः सेयं
याति शकुन्तला पतिगृहं सर्वैरनुज्ञायताम् ॥(4/9)

- अथर्ववेद के ऋषि पृथ्वी को माता के रूप में देखते हैं –

माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः ।(12/1/12)

- भ्रातृत्व की अवधारणा को भारत में मनुष्य , देशकालादि की सीमा में नियत नहीं किया गया है, अपितु यही प्राणि मात्र के लिए की गई है –

मा मित्रस्य मा चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम्।
मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे।
मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे ।।(यजुर्वेद 36/18)

- भोजन, वस्त्र एवं आश्रय पर सभी का समान अधिकार, इस तथ्य को अथर्ववेद में स्थापित किया गया है, ऋषि कहते हैं कि भोजन, वस्त्र, आश्रय की व्यवस्था प्रत्येक का अधिकार है, जो माता के गर्भ से उत्पन्न हुआ है। (अथर्ववेद 12/1/60)

2024 TPJ | VOLUME 2, ISSUE 1
April - June | ISSN – 2584- 0517

- वास्तव में यह 'मेरा भाई है, यह पराया है। इस दृष्टिकोण को भारतीय परंपरा हेय मानती है, व्यापक दृष्टि वाले लोगों के लिए सम्पूर्ण पृथ्वी ही कुटुम्ब है –

अयं निजः परो वेति गणना लघु चेतसाम् ।
उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम् ।।

- वैदिक ऋषियों ने सम्पूर्ण ब्रह्माण को एक इकाई के रूप में माना है-

"इमे लोका इमे देवा इमानि भूतानीद सर्वं यदयमात्मा।।" (बृहदारण्यक०)

- हमारे प्राचीन ऋषियों का मत है कि सभी जीवित प्राणि एवं जड़ पदार्थ भी भगवान के ब्रह्माण्डीय शरीर का अंग हैं। एक अंग से दूसरे अंग को होने वाली हानि सम्पूर्ण संरचना को प्रभावित करेगी, भागवतमहापुराण में कहा गया है-

"द्विषन्तः परकायेषु स्वात्मानं हरिमीश्वरम् ।
मृतके सानुबन्धेऽस्मिन् बद्धस्नेहाः पतन्यधः ।।"
(11/5/15)

सम्पूर्ण लौकिक संस्कृत साहित्य के अनुशीलन से ज्ञात होता है कि करुणा, परोपकार ,मानवता के प्रति सम्मान, उदारता, कर्तव्य की भावना, सभी के प्रति प्रेम आदि समानता के अधिकार को स्थापित करने हेतु अपरिहार्य है।

इसी प्रकार वैदिक-आश्रमव्यवस्था में अन्तिम आश्रम के रूप में लोकयात्रानुकूल-वैराग्य से युक्त व्यक्तित्व की ही कल्पना है जो कि समस्त एषणाओं से परे होकर समाज का मार्गदर्शन कर सकने की स्थिति में रहता है। इस तरह विरक्त-भाव भी यहां लोकजीवन के लिए एक सहयोग प्रदान करने की स्थिति में रहता है; इसी प्रकार लौकिक संस्कृत वाङ्मय के रामायण एवं महाभारत तथा भवभूति, कालिदास, बाणभट्ट इत्यादि के काव्यों में तपोवन सन्दर्भ में वर्णित जीवन मूल्य वर्तमान वैश्विक परिप्रेक्ष्य में अत्यन्त प्रासङ्गिक हैं। प्रस्तुत शोधपत्र में इन्हीं बिन्दुओं के आधार पर भारतीय जीवन दर्शन की समदृष्टि का सार्वभौमिक परिप्रेक्ष्य में विचार किया जाएगा।

Methodology - प्रस्तुत शोधपत्र में भारतीय जीवनदर्शन सम्बद्ध ग्रन्थों का अध्ययन किया जाएगा। यहाँ पर विषयवस्तु विश्लेषण विधि (Content Analysis) के माध्यम से यह कार्य सम्पादित किया जाएगा। इस शोध कार्य पत्र में विश्लेषणात्मक, व्याख्यानात्मक एवं तुलनात्मक प्रविधि का आश्रयण मुख्यतया किया जाएगा। प्राचीन भारतीय परंपराओं की प्रासंगिकता के सन्दर्भ में विश्लेषण का आश्रय लिया जाएगा। नैतिक सिद्धान्त प्रभृति व्याख्या- सापेक्ष विषयों पर विचार हेतु व्याख्या एवं वर्तमान में (प्रचलित वैश्विक समस्यायों के निदान के रूप में प्रचलित अन्य परंपरायों का भारतीय परंपराओं से तुलनात्मक विमर्श किया जाएगा।

Objectives-

1. भारतीय जीवन दर्शन एवं पाश्चात्य जीवन दर्शन का विश्लेषण
2. वर्तमान कालिक वैश्विक समस्याओं के संधारणीय समाधान को प्रस्तुत करना
3. भारतीय जीवनदर्शन के सिद्धान्तों का वर्तमान कालिक अनुप्रयोग

Conclusion-

भारतीय परंपरा में मनुष्य एवं उसके द्वारा सामाज के उत्कर्ष पर निरंतर 5000 वर्षों से तार्किक विचार होता आया है। इस परंपरा में अद्यावधि जो चिन्तन होता रहा

2024 TPJ | VOLUME 2, ISSUE 1
April - June | ISSN – 2584- 0517

है, वह जाति, समाज, सम्प्रदाय, देश, काल मात्र में सीमित न होता हुआ सार्वदेशिक एवं सार्वकालिक है। वैदिक साहित्य, पुराण, लौकिक साहित्य, दर्शन आदि समस्त भारतीय साहित्य में मनुष्य में समदृष्टि के विकास पर निरंतर चिंतन प्राप्त होता है। भारतीय जीवनदर्शन का आश्रयण कर विश्व में समदृष्टि का भाव सभी में जागरित करते हुए पृथ्वी को सभी के लिए एक सुंदर स्थान बनाया जा सकता है, जहां पर प्राणिमात्र – 'सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः। सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद्दुःखभाक् भवेत्'॥ की भावना को चरितार्थ होते हुए देख पायेंगे।

References-

1. Acharya Shree Ram Sharma (ed.), (2002), Atharvaveda, Brahmavarchas, Hardwar

2. Anonymous, (1972), (Samvat 2029), Brihadaranyakopnishad with Shankar Bhashya, Gita Press, Gorakhapur

3. Chand Devi (tr.), (1980), The Yajurveda, Munshiram Manoharlal Publishers Pvt. Ltd., New Delhi

4.Chaubey Dr. Braj Bihari, (1997), The New Vedic Selection (Part I), Bharatiya Vidya Bhawan, Delhi

5. Deva Acharya Dharma (tr.), (2004), The Rg Veda, Sarvadesik Arya Pratinidhi Sabha, New Delhi

6. Kale MR (ed.), (2006), The Uttarramcharitam of Bhavbhūti, Motilal Banarasidas Publishers Private Ltd., Delhi

7.Manu, (2005), Manu Smrti edited by Rajveer Shastri, Aarsh Sahitya Prachar Trust, Delhi

8.Mishra, Bhagvan Dutta, (1955), Sisupālvadham, Chaukhamba Vidya Bhawan, Varanasi

9.Pathak Dr. Jamuna (ed), (1984), Abhijñānaśākuntalam, Shree Ghanshyam Das and Sons Publishers, Faizabad

10. Ramsukhdas Swami (ed) (2000), Srimad Bhagvad Gita- Sadhak Sanjeevani, Gita Press, Gorakhpur, 13/27Vyasa Veda, (1987), (Samvat 2044), Mahābhāratam, Gita Press, Gorakhpur

11. Valmiki, (1974), Srimad Valmiki Rāmāyaṇa, Gita press, Gorakhpur

12. Vyasa Veda, (1982) Śrimad Bhagvata Mahāpurāṇa, translated by C.L.. Goswami, Gita Press, Gorakhpur